# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

## प्रथम वर्ष - अभ्यास - ८

June - 2021

## प्रश्न - पत्र

गुणांक - १०८

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा ।

**प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो -** २०

१. गौतम स्वामी ..... सिद्ध हुए ।
२. दो हाथ, दो घुटने और मस्तक ये पाँच अंग भूमि को स्पर्श करे इस तरह वंदन ..... कहलाता है ।
३. ..... से नये कर्म बंधते अटकते हैं ।
४. गुणानुरागी जीव निर्गुणी की तरफ भी ..... ही धारण करता हैं ।
५. ..... बिना मोक्ष नहीं ।
६. जहाँ व्यक्ति का ..... होगा वहाँ स्वंयमेव बहुमान, सन्मान जगेगा ।
७. वीर प्रभु के पिता ..... गोत्र वाले थे ।
८. रोहिणी धर्म पाकर भी ..... सब हार गई ।
९. कर्म का आत्मा के साथ रहने का समय ..... कहलाता हैं ।
१०. सच झुठ का ..... याने विवेक ।
११. वर्धमान कुमार ने पंडित को दिये उत्तरों पर से ..... तैयार हुआ ।
१२. बाहर की चमक, दमक देखकर प्रभावित होने वाले व्यक्ति के पास ..... नहीं होती ।
१३. कर्म पुद्गलों को आत्मा से अलग करना वह ..... है ।
१४. संसार के सभी संबंध ..... है ।
१५. काया वगैरह व्यापार का त्याग और योग की निश्चलता ..... तप है ।
१६. गुरु स्थापना सूत्र का दूसरा नाम ..... है ।
१७. सबसे अधिक ऊँचाई ..... नरक के जीवों की है ।
१८. तीर्थंकरों के हाथों से मिले दान को ..... अपने भंडार में रखें ।
१९. जिसका परिवार सदाचार युक्त हो वह ..... कहलाता है ।
२०. ..... महाभयंकर सर्प का रुप बनाकर वीर प्रभु की परीक्षा लेने आया ।

**प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -** १५

१. वल्कलचिरी कौन से भेद से सिद्ध हुए ?
२. गुणवान व्यक्तिओं की सन्मान पूर्वक भक्ति करना वह क्या है ?
३. किस सूत्र में आचार्य भ. के छत्तीस गुणों का वर्णन है ?
४. श्रमण भगवान महावीर की पत्नि का गोत्र कौनसा हैं ?
५. अनशन याने क्या ?
६. मोहराजा के सेनापति का पुत्र कौन है ?
७. लोच यह कौनसा तप है ?
८. राजा के भंडारी जैसा कौन सा कर्म है ?
९. कषाय, मिथ्यात्व, कर्म आदि के त्याग को क्या कहा जाता है ?
१०. शक्ति होते हुए भी किसकी शक्ति आत्मकल्याण में सहायक नहीं बनती ?
११. प्रियदर्शना का दूसरा नाम क्या था ?
१२. इच्छकार सूत्र में दोपहर के पश्चात क्या बोल कर शाता पूछी जाती है ?
१३. गुणानुरागी गुणवानजनों को क्या कहते हैं ?
१४. पुराने कर्म किससे क्षय होते है ?
१५. साधु कितनी कर्म भूमि में होते हैं ?

**प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -** १०

१) रसच्चाओ २) दंसणावरणे ३) चउ ४) नवविह ५) संचओ ६) अब्भितरओ ७) जोयण ८) जोणी
९) सुपक्खो १०) सव्वेसिं ११) नेरइया १२) भेया १३) चरित १४) परस्य १५) आलावे १६) अणाइ
१७) कलसिय १८) पवत्तइ १९) परिहिणं ३०) रायकहाओ

**प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) -** १०

| A | B |
|---|---|
| १) त्रिशला | १) मोहनीय कर्म |
| २) विचक्षण | २) रस |
| ३) मरुदेवा माता | ३) दक्ष |
| ४) शेषवती | ४) स्वाध्याय |
| ५) अनुप्रेक्षा | ५) प्रीतिकारिणी |
| ६) अनुभाग | ६) कुंभार |
| ७) चित्त की शुद्धि | ७) अतीर्थ सिद्ध |
| ८) योग की एकाग्रता | ८) प्रायश्चित |
| ९) गोत्र कर्म | ९) यशस्वती |
| १०) मदिरा | १०) ध्यान |

**प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -** १०

१. कर्म की मूल प्रकृति कितनी ?
२. विनय तप के प्रकार कितने ?
३. तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भेद कितने ?
४. ब्रम्हचर्य की वाड कितनी ?
५. वीरप्रभु का गृहवास कितने वर्ष का था ?
६. सिद्ध के भेद कितने ?
७. चतुरेन्द्रिय की शरीर की ऊँचाई कितनी ?
८. साधु कितने शील, चारित्र के अंग के धारक है ?
९. एक समय में ज्यादा से ज्यादा कितने मोक्ष में जाते हैं ?
१०. मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिती कितनी ?

**प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही ( ✓ ) हैं या गलत (×) बताओ -** १०

१. आर्त और रौद्रध्यान संसार को घटाने वाले है ।
२. शहद से सनी तलवार जैसा वेदनीय कर्म है ।
३. गुजरात में दिन दहाडे लूट होती है, यह राज कथा है ।
४. तीर्थंकरो के दिये दान के प्रभाव से दो साल तक इन्द्रो में कलह नहीं होता ।
५. इच्छकार सूत्र से गुरु के प्रति हुए अविनय अपराध की क्षमापना ली जाती है ।
६. उदरपूर्ति के लिये जितना जरुरी है, उतना खाना उणोदरी तप है ।
७. वीर प्रभु के माता-पिता पार्श्वनाथ प्रभु के भक्त श्रावक थे ।
८. गांगेय स्वलिंग सिद्ध हुए ।
९. दुर्योधन को सभा में सभी दुर्जन ही नजर आये ।
१०. भवनपति देव विद्याधरों को दान लेने के समाचार देते हैं ।

**प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -** १०

१. चौदह राजलोक में कार्मण वर्गणा तो ठूंस ठूंस कर भरी हुई हैं ।
२. हे राजन् ! मेरी कन्या मेरी बात मानती नहीं है, वह मेरी आज्ञा में नहीं है ।
३. अन्य वीर होंगे आप अपने धैर्य और पराक्रम से महावीर हो ।
४. सभी धर्म क्रियायें गुरु की आज्ञा लेकर करनी चाहिये ।
५. सम्यग् दर्शन के साथ प्राप्त किये हुए व्रत आदि में भी अतिचार घटते जाते है ।
६. कार्मण वर्गणा आत्मा के साथ क्षीर नीर की तरह एक-मेक होकर कर्मस्वरुप चिपकती है, उसे बंध कहते हैं ।
७. उसी तरह आत्मा के साथ जुडते शुभ-अशुभ कर्म के रस में तरतमता होती है ।
८. तीसरा शिष्य उद्यमवंत बना, उद्यमी रहकर परिवार को अप्रमादी बनाता रहे ।
९. पंचमकाल में छोटे छोटे गुण की प्राप्ति भी अत्यंत दुष्कर बन गई है ।
१०. प्रत्येक वनस्पतिकाय एक हजार योजन से भी अधिक ऊँचाई वाला हो सकता है ।

**प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -** १५

१) कर्म प्रकृतियों के स्वभाव बताइये (कोई दो ) २) जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि ३) गुरुस्थापना सूत्र
४) प्रभु महावीर का परिवार ५) प्रदेश बंध

**उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :**
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४३४८४, सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com